AD EDUXIAN JOURNAL
A Quarterly Multidisciplinary Blind Peer Reviewed & Refereed Online International Journal
Google Scholar Indexing PIF:1.048(I2OR) & 3.125 (IIFS)
Vol (2), Issue (3), Oct-Dec 2025 ISSN: 3048-7951

उत्तर- आधुनिकता और हिंदी साहित्य की नई संवेदना

डॉ. पायल[1]

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.17645160

समीक्षा:१९/१०/२०२५ **स्वीकृति: ०१/११/२०२५** **प्रकाशित;१९/११/२०२५**

सार: बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में औद्योगिक, तकनीकी और सामाजिक परिवर्तनों ने साहित्यिक संवेदनाओं को गहराई से प्रभावित किया। इन्हीं परिवर्तनों के बीच उत्तर-आधुनिकता एक ऐसी विचारधारा के रूप में उभरी, जो आधुनिकता के सार्वभौमिक सत्य, तर्क, स्थिर संरचनाओं और मानकों पर प्रश्नचिह्न लगाती है। ल्योटार्ड, फौकॉल्ट और देरिदा जैसे विचारकों ने 'मेटानैरेटिव', शक्ति-संरचना और अर्थ की स्थिरता को चुनौती देकर इसे दार्शनिक आधार दिया। हिंदी साहित्य में उत्तरआधुनिक चेतना 1980 के बाद प्रमुखता से प्रकट हुई, जब उदारीकरण, तकनीकी विस्तार और बाज़ारवाद ने मनुष्य की पहचान और अनुभव को बदल दिया। इस युग में साहित्य का केंद्र 'समूह' की जगह 'व्यक्ति' बन गया—वह व्यक्ति जो भीड़ में अकेला और आंतरिक संघर्षों से घिरा है। कहानी, उपन्यास, कविता और नाटक में इस दौर में विविधता, विखंडन, अस्थिरता और आत्मनिरीक्षण की प्रवृत्तियाँ उभरती हैं। कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल आदि लेखकों ने नए सामाजिक यथार्थ, हाशिए के अनुभव, पहचान के संकट और सांस्कृतिक तनावों को नए प्रारूप में प्रस्तुत किया। कविता में मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, अनामिका आदि ने तकनीकी युग की संवेदनात्मक चुनौतियों को स्वर दिया। नारीवाद और दलित साहित्य के उभार ने उत्तर-आधुनिक हिंदी साहित्य को नई दिशा दी, जहाँ देह, इच्छा, पहचान, संघर्ष और आत्मकथा नए विमर्श के रूप में उभरे। ओमप्रकाश वाल्मीकि की जूठन जैसी रचनाएँ इसी परिवर्तन का सशक्त उदाहरण हैं। भाषा के स्तर पर भी साहित्य अधिक बोलचाल, लोक-शैली और मीडिया-प्रभावित रूप में सामने आता है। इंटरनेट और डिजिटल माध्यमों ने साहित्य को लोकतांत्रिक और तात्कालिक बनाया, जहाँ लेखक-पाठक दूरी कम हुई। हालांकि कुछ आलोचकों ने इसे मूल्य-संकट और व्यक्तिवाद को बढ़ावा देने वाला बताया, फिर भी इसकी बहुलता और विविधतापूर्ण दृष्टि ने हिंदी साहित्य को नई संवेदना और नई दिशा प्रदान की। इस प्रकार, ***"उत्तर-आधुनिक हिंदी साहित्य अनेक सत्यों, अनेक अनुभवों और अनेक आवाज़ों का साहित्य है—जो समकालीन युग की जटिलताओं, विखंडनों और बदलावों का प्रामाणिक दर्पण है।"***

मुख्य शब्द: बहुलता व्यक्ति-केंद्रित नया प्रयोग नारीवाद/दलित आवाज़ भाषा और डिजिटल।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में मानव सभ्यता में तेजी से औद्योगिक, सामाजिक और तकनीकी परिवर्तनों के साथ, साहित्य की संवेदनाएं भी बदलने लगीं। औद्योगिक पूँजीवाद, शहरीकरण, वैज्ञानिक प्रगति, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण ने व्यक्ति के सोचने, जीने और अनुभव करने के तरीके को नया रूप दिया। इन्हीं परिवर्तनों के बीच साहित्य में एक नई दृष्टि जन्मी - उत्तर-आधुनिकता। उत्तर आधुनिकता का अर्थ है आधुनिकता के स्थापित मूल्यों,

[1] डॉ. पायल, सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, श्री रावतपुरा सरकार यूनिवर्सिटी, रायपुर

विचारों और प्रतिमानों पर सवाल उठाना। यह एक ऐसी विचारधारा है जो सत्य, सौंदर्य और नैतिकता के किसी भी सार्वभौमिक मानक को स्वीकार नहीं करती है। इसके केंद्र में व्यक्ति का अनुभव, बहुलता और अस्थिरता निहित है। साहित्य में यह प्रवृत्ति आधुनिकतावादी विचारधारा की सीमाओं को तोड़ती है और नए विमर्शों को जन्म देती है। हिंदी साहित्य में भी उत्तर आधुनिकतावाद ने नई संवेदनाओं, नई भाषा और नए सामाजिक विमर्शों को जन्म दिया है।

उत्तर आधुनिकतावाद केवल कला की प्रवृत्ति नहीं है, बल्कि यह आधुनिकता के आदर्शों के खिलाफ असहमति की आवाज है। जहाँ आधुनिकता ने यथार्थ, तर्क और सार्वभौमिक मूल्यों पर विश्वास किया, वहीं उत्तर-आधुनिकता ने इस विश्वास पर प्रश्नचिह्न लगाया । इस विचारधारा का मानना है कि किसी भी सत्य को सार्वभौमिक रूप से स्वीकार नहीं किया जा सकता है; हर व्यक्ति, हर समाज, हर अनुभव की अपनी सापेक्षता होती है। हिंदी साहित्य ने भी इस बदलते युग में प्रवेश किया और एक नई चेतना और एक नई संवेदनशीलता को जन्म दिया - जो आज के बहुलतावादी विश्व को सही ढंग से व्याख्यायित करती है ।

उत्तर-आधुनिकता मूलतः पश्चिमी चिंतन से आई हुई विचारधारा है जिसका आरंभ 1960 के दशक में हुआ । जीन फ्रांकोइस ल्योटारे, मिशेल फौकॉल्ट, जैक्स डेरिडा जैसे विचारकों ने व्यक्ति को एक 'वस्तु' के रूप में देखने वाली आधुनिक तर्कवादी और सार्वभौमिकतावादी प्रवृत्ति को चुनौती दी।

उत्तर-आधुनिकतावाद शब्द का प्रयोग पहली बार बीसवीं शताब्दी के मध्य में किया गया था। पश्चिमी विचारकों जीन-फ्रांकोइस लियोटार्ड, मिशेल फौकॉल्ट, जैक्स डेरिडा, बॉड्रिलियर और फ्रेडरिक जेम्सन ने इस अवधारणा को विकसित किया। ल्योटार्ड ने कहा, "उत्तर-आधुनिकतावाद एक ऐसी स्थिति है जिसमें मानव समाज अब 'मेटानैरेटिव' में विश्वास नहीं करता है।"1 इसका मतलब यह है कि किसी एक विचारधारा या सत्य को अंतिम नहीं माना जाएगा। जीवन और ज्ञान अब खुद को कई रूपों में प्रकट करते हैं और यह बहुलता उत्तर आधुनिकतावाद की आत्मा है। फौकॉल्ट ने इसे "शक्ति-संरचनाओं की आलोचना" के रूप में देखा, जबकि देरिदा ने भाषा और अर्थ की अनिश्चितता को अपने केंद्र में रखा। इस प्रकार, उत्तर-आधुनिकतावाद मूल रूप से 'संदेह' और 'विविधता' की चेतना है।

छायावाद और प्रयोगवाद के साथ हिंदी साहित्य में आधुनिकता का उदय हुआ, जिसमें व्यक्ति की चेतना और आत्म-खोज की भावना का बोलबाला था, लेकिन यह व्यक्ति ज्यादातर शिक्षित, शहरी और पुरुष-प्रधान था। उत्तर-

आधुनिक युग में, यह चेतना फैलती है और इसमें उन वर्गों को शामिल किया जाता है जो अब तक हाशिए पर थे।

हिंदी साहित्य में उत्तर-आधुनिक रुझान पहली बार 1980 के दशक के बाद प्रमुखता से दिखाई देने लगे। यह वह समय था जब भारत में आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी विस्तार और मीडिया का प्रभाव तेजी से बढ़ रहा था। मनुष्य अब केवल समाज का हिस्सा नहीं था, बल्कि बाजार व्यवस्था का एक हिस्सा था। डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं, "उत्तर आधुनिकतावाद का अर्थ है परिवर्तनशीलता को स्वीकार करना, किसी भी स्थायी व्यवस्था पर संदेह करना।"2 हिंदी लेखकों ने इस अवधि में मानव के अकेलेपन, संघर्ष, पहचान के संकट और सांस्कृतिक विघटन को गहराई से व्यक्त किया। अब साहित्य का केंद्र एक 'समूह' नहीं, बल्कि एक 'व्यक्ति' बन गया - वह व्यक्ति जो भीड़ में अकेला है।

"न्यू सेंसेशन" उत्तर-आधुनिक युग का एक बड़ा उपहार है। यह अनुभूति जीवन के प्रति एक नए दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है, जहां किसी भी विचार या मूल्य को अंतिम सत्य नहीं माना जाता है। आधुनिक साहित्य में, व्यक्ति समाज के साथ संघर्ष करता है, और उत्तर-आधुनिक साहित्य में, व्यक्ति भीतर संघर्ष करता है, उसकी पहचान और उसके अस्तित्व के साथ। यह अनुभूति न केवल सामाजिक वास्तविकता को देखती है बल्कि आंतरिक अनुभवों, मनोवैज्ञानिक संघर्षों और सांस्कृतिक विखंडनों को भी समझती है। यह साहित्य को अधिक मानवीय और आत्मनिरीक्षण करने वाला बनाता है।

उत्तर-आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में विषयों की विविधता, तकनीकी प्रयोग और विचारों की खुली दृष्टि देखने को मिलती है। कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी, सूरजपाल चौहान, असगर वजाहत, उदय प्रकाश, चित्रा मुद्गल जैसे लेखकों ने सामाजिक यथार्थ को नए तरीके से प्रस्तुत किया। निर्मल वर्मा की "धूप का एक टुकड़ा" और "परिंदे" जैसी कहानियां व्यक्ति की आध्यात्मिक यात्रा को दर्शाती हैं। आधुनिक जीवन के शोर में मनुष्य के अकेलेपन को व्यक्त करती है। इस विषय में निर्मल वर्मा का कथन उल्लेखनीय है: "प्रत्येक व्यक्ति अपने भीतर एक अजनबी के साथ संवाद करता है। यह संवाद उत्तर-आधुनिक संवेदनाओं का प्रतीक है।"3

कमलेश्वर का उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' इतिहास, राजनीति और धर्म से परे मानवीय अनुभव की गहराई को दर्शाता है। यह रचना समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ती है - जहां विभाजन न केवल भौगोलिक है, बल्कि मानसिक और सांस्कृतिक भी है। राजेंद्र यादव ने "हंस" पत्रिका के माध्यम से महिलाओं, दलितों और हाशिए पर

पड़े लोगों के विमर्श को साहित्य का केंद्र बनाया। उन्होंने कहा, "अब साहित्य किसी एक वर्ग या विचारधारा की संपत्ति नहीं है।"4

उत्तर-आधुनिक हिंदी कविता ने जीवन के बदलते स्वरूप को बहुत गहराई से पकड़ा है। कवि अब नई कविता और प्रयोगवाद की परंपरा का पालन करते हुए समाज, प्रौद्योगिकी और बाजार की नई चुनौतियों से जूझ रहे हैं। मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, अरुण कमल, वीरेन डंगवाल, अनामिका, आलोक धन्वा, गौरव सोलंकी आदि कवियों ने अपने समय की बेचैनी को स्वर दिया है। मंगलेश डबराल की कविता "यही समय है" में एक पंक्ति है - "हम जो देखते हैं वह अब दिखाई नहीं दे रहा है, यह एक ऐसे युग का प्रतीक है जहां सब कुछ देखा जा रहा है, लेकिन महसूस नहीं किया जा रहा है।"5

अनामिका की कविताएं एक महिला के मन और देह की एक नई व्याख्या पेश करती हैं। वह परंपरा को तोड़ती है और खुद को फिर से परिभाषित करती है। राजेश जोशी की कविता "मन की पहचान" उत्तर-आधुनिक युग की सामाजिक संवेदनशीलता को व्यक्त करती है - "जो आदमी अभी भी काम पर जाता है, और वापस आता है, वही आदमी है।"6 यह सरल कथन उपभोक्तावादी और कृत्रिम समय में जीवित मानव चेतना का प्रतीक है।

इसी तरह, उत्तर-आधुनिक नाटक भी मिथक, इतिहास और समकालीन वास्तविकता के संयोजन को प्रकट करता है। गिरीश कर्नाड, मोहन राकेश, महेश दत्तानी जैसे नाटककारों ने पारंपरिक नाट्य रूपों को तोड़कर नई संरचनाओं का निर्माण किया। गिरीश कर्नाड के नाटक "तुगलक", "नागमंडल" और "हयवदन" शक्ति, पहचान और मानवीय संबंधों की जटिलता का प्रतीक हैं। इनमें मिथक आधुनिक मनोविज्ञान से जुड़ते हैं और नए अर्थों में खुलते हैं। मोहन राकेश का 'आषाढ़ का एक दिन' भी इसी प्रवृत्ति का हिस्सा है, जिसमें इतिहास और वर्तमान के बीच संवाद बनता है।

उत्तर-आधुनिक युग में, नारीवाद साहित्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया। महिलाएं अब केवल सहानुभूति की वस्तु नहीं हैं, वे अपनी इच्छाओं, अस्तित्व और अधिकारों की एक मुखर अभिव्यक्ति हैं। कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, चित्रा मुद्गल, मृदुला गर्ग, अनामिका जैसी रचनाकारों ने महिलाओं को केंद्र में रखा। कृष्णा सोबती के उपन्यास "मित्रो मरजानी" में महिलाओं की दमित इच्छाओं और सामाजिक नैतिकता के टकराव को दिखाया गया है। चित्रा मुद्गल की 'आवां' आधुनिक महिला के कार्य संघर्ष पर प्रकाश डालती है। डॉ. अर्चना वर्मा के अनुसार- "उत्तर आधुनिक हिंदी के लेखन में देह, इच्छा और पहचान के प्रश्न एक साथ उठते हैं।"7 यह संवेदनशीलता समाज में महिलाओं के स्वतंत्र अधिकार और स्वीकृति की दिशा में एक बड़ा कदम है।

उत्तर आधुनिकतावाद ने 'केंद्र' और 'हाशिए' के बीच के अंतर को तोड़ दिया। अब साहित्य में वे आवाज़ें भी शामिल हैं जिन्हें पहले दबा दिया गया था। ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा "जूठन", मोहनदास नैमिसराय, जयप्रकाश कर्दम, कुसुम मेघवाल जैसे लेखकों ने सामाजिक यथार्थ के कटु सत्य को प्रस्तुत किया। यह साहित्य इस बात का प्रमाण है कि अनुभव की प्रामाणिकता किसी वर्ग विशेष से संबंधित नहीं है। जैसा कि ओमप्रकाश वाल्मीकि कहते हैं, "हमारा जीवन दूसरों की कहानी नहीं है, यह हमारा अपना इतिहास है।"8 यह आत्म-मुखर स्वर उत्तर-आधुनिकतावाद के विचार के अनुरूप है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को अपनी कहानी बताने का अधिकार है।

उत्तर-आधुनिक हिंदी साहित्य की भाषा अब पारंपरिक औपचारिकता से मुक्त है । इसमें लोकभाषा, मीडिया की भाषा, और तकनीकी शब्दावली का मिश्रण दिखाई देता है । डॉ. विश्वनाथ त्रिपाठी लिखते हैं - "उत्तर आधुनिक हिंदी लेखन ने साहित्यिक भाषा की दीवारों को तोड़कर संचार की एक नई भाषा विकसित की है।"9 इस भाषा में हास्य, व्यंग्य, मुहावरे और बोलचाल की सहजता है, जिससे यह आम पाठक के करीब आ जाती है।

उत्तर-आधुनिक युग में, तकनीकी साधनों ने साहित्य की अभिव्यक्ति को बदल दिया। अब निर्माता पुस्तक तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इंटरनेट, ब्लॉग, यूट्यूब, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया के माध्यम से संचार करता है। रवींद्र प्रभात लिखते हैं, "ब्लॉगिंग हिंदी साहित्य की उत्तर-आधुनिक अभिव्यक्ति है, जिसमें लेखक और पाठक के बीच की खाई को पाट दिया गया है।"10 यह तकनीकी लोकतंत्रीकरण साहित्य को पहले से कहीं अधिक खुला, समावेशी और तात्कालिक बना रहा है।

जबकि उत्तर आधुनिकतावाद ने विचारों की विविधता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी, कुछ आलोचकों ने इसे मूल्य संकट और आर्थिक संकट के कारण के रूप में भी उद्धृत किया। राम विलास शर्मा ने कहा, "उत्तर आधुनिकता एक व्यक्ति को समाज से अलग कर देती है और उसे अलग-थलग कर देती है।"11 वास्तव में, उत्तर-आधुनिकता का यह पहलू भी सत्य है कि यह किसी एक दिशा या स्थायित्व की ओर नहीं जाती । फिर भी, यही अस्थायित्व आज के जीवन की सच्चाई है - जहाँ परिवर्तन ही स्थायित्व है ।

उत्तर आधुनिकतावाद ने हिंदी साहित्य को विचार की एक नई दिशा और भावना की एक नई गहराई दी है। यह साहित्य अब न केवल वास्तविकता को दर्शाता है बल्कि वास्तविकता के भीतर छिपे विखंडन और द्वंद्व को भी प्रकट करता है। हिंदी साहित्य, एक नई अनुभूति के रूप में, अब अधिक आत्मनिरीक्षण करने वाला, स्वतंत्र और विविध है। नई संवेदना के रूप में उत्तर आधुनिक हिंदी साहित्य अब अधिक आत्मसमीक्षात्मक, अधिक स्वतंत्र और अधिक बहुरंगी हुआ है । यह साहित्य किसी एक सत्य का नहीं, अनेक सत्यों का प्रतिनिधि है - जहाँ हर आवाज़,

हर अनुभव, हर पहचान का सम्मान है । इस दृष्टि से उत्तर आधुनिक हिंदी साहित्य न केवल अपने समय की अभिव्यक्ति है, बल्कि आगे का रास्ता दिखाने वाला एक प्रकाशस्तंभ भी है। यह हमें बताता है कि विचारों की विविधता साहित्य की सबसे बड़ी ताकत है और संवेदनशीलता की यह नई भूमि हमारे समय की वास्तविक पहचान है।

संदर्भ सूची

1. Lyotard Jean-François, The Postmodern Condition: A Report on Knowledge, Manchester University Press, 1979
2. सिंह नामवर, आधुनिकता से उत्तर-आधुनिकता तक, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1997
3. वर्मा निर्मल, लाल टीन की छत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1993
4. यादव राजेंद्र, "संपादकीय", हंस, अगस्त अंक, 1990
5. डबराल मंगलेश, हम जो देखते हैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
6. डबराल मंगलेश, हम जो देखते हैं, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1996
7. वर्मा अर्चना, समकालीन विमर्श और हिंदी साहित्य, भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2015
8. वाल्मीकि ओमप्रकाश, जूठन, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, 1997
9. त्रिपाठी विश्वनाथ, भाषा और रचना का समाजशास्त्र, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2010
10. प्रभात रवींद्र, हिंदी ब्लॉगिंग : अभिव्यक्ति की नई क्रांति, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2012
11. शर्मा रामविलास, साहित्य और समाज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, 2002